Title: Regarding atrocities on the farmers by the Police in Bihar for unable to pay their debts taken from banks and other government agencies.

श्री रघुनाथ झा (गोपालगंज) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सबसे दयनीय स्थिति बिहार के किसानों की है। सहकारिता जो गांव की अर्थव्यवस्था एवं कृि का मुख्य जरिया है, दम तोड़ रही है। किसानों को प्रति वर्ा नेपाल से आने वाली नदियों के बाढ़ से करोड़ों रुपये और जान माल की क्षति हो रही है। नदियों के कटाव से प्रति वर्ा सैंकड़ों गांव कट कर नदी में विलीन हो जाते हैं और उन विस्थापितों का न पुनर्वास हो रहा है और न ही किसी प्रकार की सहायता दी जा रही है।

सबसे बड़ा जुल्म किसानों के साथ हो रहा है कि जब किसान या खेतिहर, भूमि विकास बैंक अथवा अन्य किसी बैंकों के ऋण, फसल की बर्बादी, बाढ़, सूखा या अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण समय पर नहीं चुका पाता तो उन्हें गिरफ्तार किया जाता है और किसानों से जीप भाड़ा, पुलिस बल का खर्चा एवं जेल में बंद करने पर प्रतिदिन 42 रुपये के हिसाब से भोजन खर्चा लिया जाता है। ऐसा व्यवहार चोर, डकैत, मर्डरर किसी के साथ नहीं किया जाता। आजादी के पचास वर्ों बाद बिहार के किसानों के साथ इस तरह से बैंक ऋण की वसूली में जो व्यवहार हो रहा है, मैं आपकी मार्फत भारत सरकार से मांग करना चाहता हूं कि आप जब इस तरह के लोगों से पैसा नहीं वसूलते हैं तो किसानों का क्या जुल्म है, क्या परिस्थिति है कि उससे आप सूद, दर सूद पैसा वसूलते हैं और जेल में बंद करके सारा खर्चा लेते हैं। इस पर कार्यवाही की जाए।